ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोक्ता, ऋणों का वितरण

1811. **श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा** : क्या कृषि और सिंचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोक्ता ऋणों के वितरण के लिए सरकार ने क्या प्रबन्ध किये हैं ;

(ख) वर्ष 1977-78 में इसके लिए कुल कितनी धनराशि की व्यवस्था की गई और कितनी धनराशि का उपयोग किया गया ; और

(ग) चालू वित्तीय वर्ष 1978-79 के लिए कितनी धनराशि का प्रावधान किया गया है ?

कृषि और सिंचाई मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री भानु प्रताप सिंह) : (क) उपभोज्य ऋण सम्बन्धी विशेषज्ञ समिति ने सिफारिश की थी कि पुनर्गठित प्राथमिक कृषि ऋण सोसायटियां ग्रामीण इलाकों में उपभोज्य ऋण देने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त एजेंसियां होंगी । वाणिज्यिक बैंकों तथा क्षेत्रीय बैंकों को भी एक पूरक स्रोत के रूप में माना गया था । उन इलाकों में जहां संस्थागत प्रबन्ध अपर्याप्त थे, राज्य सरकारों से यह आशा की गई थी कि वे उपभोज्य ऋणों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त प्रबंध करें । आधार स्तर की सहकारी ऋण सोसायटियों के पुनर्गठन के कार्यक्रम को एक प्राथमिकता कार्यक्रम के रूप में शुरू किया गया था ताकि उन्हें प्रशिक्षित तथा पूर्ण-कालिक वेतन भोगी सचिव अथवा प्रबंधक वाली सक्षम संस्थाओं के रूप में गठित किया जा सके । सोसायटियों और बैंकों के वित्तीय संसाधनों को मजबूत बनाया गया है । भारतीय रिजर्व बैंक ने सहकारी सोसायटियों तथा वाणिज्यिक बैंकों द्वारा उपभोज्य ऋण जारी करने के बारे में विस्तृत मार्ग दर्शक सिद्धान्त जारी किये हैं । भारत सरकार ने वर्ष 1976-77 के दौरान राज्य सरकारों को विशेष केन्द्रीय सहायता भी प्रदान की जिससे कि वे उन इलाकों, जहां संस्थागत ऋण कमजोर था, में अनुमानित उपभोज्य ऋणों के एक भाग को पूरा कर सकें ।

(ख) और (ग). भारत सरकार ने वर्ष 1977-78 तथा 1978-79 के दौरान उपभोज्य ऋणों के लिए कोई प्रावधान नहीं किया है क्योंकि ऐसे ऋण संस्थागत एजेंसियों द्वारा अथवा राज्य सरकारों द्वारा स्वयं किये जाने वाले प्रबन्धों से दिए जाने हैं ।

30 जनवरी को दिल्ली में शराब की दुकानों का खुले रहना

1812. **श्री हरगोविन्द शर्मा** : क्या शिक्षा, समाज कल्याण तथा संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या इस वर्ष 30 जनवरी को दिल्ली में सभी शराब की दुकानें खुली थीं ; और

(ख) यदि हां, तो उसके क्या कारण है ?

शिक्षा, समाज कल्याण तथा संस्कृति मंत्री (डा० प्रताप चन्द्र चन्द्र) : (क) जी, हां ।